विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

देश की तरक्की और अर्थव्यवस्था की धुरी है मध्यम वर्ग

मोदी सरकार के वर्ष 25 के सालाना बजट के बाद देश में मध्यम वर्ग को लेकर चर्चा का बाजार गर्म है। गांव-गुवाड़ से लेकर चौक-चौराहों तक मध्यम वर्ग पर बातचीत करते लोग मिल जायेंगे। आखिर ये मध्यम वर्ग है क्या जिस पर इतनी अधिक बातें सुनी जा रही है, विशेषरूप से बजट के बाद। तो आइये इस आलेख के माध्यम से हम आज मध्यम वर्ग के बारे में जानना चाहते है। देश में अमीर और गरीब की चर्चा तो हमेशा से होती आई है मगर मध्यम वर्ग के बारे में कम ही सुना जाता है जबकि यह वर्ग देश की प्रगति और तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। भारत का मिडिल क्लास सिर्फ एक आर्थिक वर्ग नहीं है, बल्कि यह समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो देश की प्रगति में योगदान देता है। एक मीडिया रिपोर्ट में अनुमान व्यक्त किया गया है कि भारत के मिडिल क्लास की संख्या 2047 तक 102 करोड़ तक पहुंच जाएगी। 2020-21 के आंकड़ों के अनुसार, यह वर्ग भारत की कुल आय का 50 प्रतिशत, खर्च का 48 प्रतिशत, और बचत का 52 प्रतिशत योगदान देता है। उदाहरण के लिए, मध्यम वर्ग ने 84,120 अरब रुपये की कुल आय अर्जित की, जिसमें से 62,223 अरब रुपये खर्च किए और 11,774 अरब रुपये बचाए। यह आंकड़े इस वर्ग की आर्थिक ताकत को स्पष्ट रूप से दिखाते हैं । आय में असमानता की बात करें तो 2020-21 में गरीब परिवारों की औसत वार्षिक आय 82,300 रुपये थी, जबकि मध्यम वर्ग की आय 6.86 लाख रुपये और अमीर परिवारों की 20.47 लाख रुपये थी । अमीर वर्ग गरीबों से 50 गुना अधिक कमाता है ।

मोदी सरकार ने वर्ष 25-26 के अपने सालाना बजट में आखिर अपने कोर मतदाताओं यानि मध्यम वर्ग की सुध बुध ली है। मध्यम वर्ग को आयकर में बहुत बड़ी राहत प्रदान कर साधने का प्रयास किया है। मोदी सरकार के इस कदम से लाखों टैक्सपयर्स को बड़ी राहत मिलेगी। वित्त मंत्री ने अपने सालाना बजट में इनकम टैक्स छूटी की सीमा बढ़ाकर 12 लाख रुपये करने का ऐलान किया है। इससे टैक्सपयर्स की बचत होगी और हाथ में खर्च करने के लिए ज्यादा पैसा आएंगे। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी अच्छी खबर है। मांग बढ़ने से इंडियन इकोनॉमी में तेजी आएगी जो भारतीय बाजार को भी बूस्ट करने का काम करेगा। इससे सबसे बड़ा फायदा मध्यम वर्ग को होगा जो भाजपा का कोर वोटर बताया जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश की कुल जनसँख्या का तीस प्रतिशत भाग अर्थात 40 करोड़ व्यक्ति मध्यम वर्ग के अंतर्गत आते हैं। महंगाई की मार भी यही वर्ग झेलता है। आज़ादी के बाद संभवत: यह पहला अवसर है जब मध्यम वर्ग को आयकर के क्षेत्र में इतनी बड़ी राहत दी गई है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका संकेत बजट से एक दिन पहले दे दिया था। मोदी के गरीब और मध्यम वर्ग को राहत देने के लिए धन की देवी मां लक्ष्मी का आव्हान करने के बाद आयकर में राहत मिलने की उम्मीदें बढ़ गई थी। मोदी सरकार, मध्यम वर्ग को दी गई इस छप्पर फाड़ राहत का दिल्ली में विधानसभा चुनाव सहित आगे आने वाले चुनावों में फायदा मिलने की उम्मीद कर सकती है।

असल में भारत की अर्थव्यवथा की धुरी है यह वर्ग। मध्यम वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर होता है और दैनिक जीवन में काफी अनिश्चितता का सामना करता है लेकिन, वह बेहतर जीवन स्तर की आकांक्षा रखता है। यह ऐसा वर्ग है जो लेता कम और कर के रूप में देश को देता ज्यादा है। अपनी आवश्यकताएं पूरी न होने के बावजूद टैक्स की भरपाई में आगे रहता है।

हमारे समाज को सदियों से उच्च, मध्यम और निम्न वर्गों में बाँट कर देखा जाता है। उच्च वर्ग धनिक वर्ग में गिना जाता है जिस पर कोई संकट कम ही आता है। निम्न वर्ग अपने हाल पर मस्त है मगर मध्यम वर्ग पर अपने साथ देश की चिंता का भूत सवार रहता है। देश की आजादी में मध्यम वर्ग की बड़ी भूमिका और योगदान रहा है। मध्यम वर्ग, केवल आर्थिक ही नहीं अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक बदलाव, परिवर्तन, विकास एवं संवृद्धि का वाहक भी होता है। उदारीकरण, बाजारीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में सबसे ज्यादा प्रभावित मध्यम वर्ग हुआ है। आईएचएस मार्किट की एक रिपोर्ट में माना है कि, भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सकारात्मक कारक इसका बड़ा और तेजी से बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग है, जो उपभोक्ता खर्च को चलाने में मदद कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश की कुल जनसँख्या का तीस प्रतिशत भाग अर्थात 40 करोड़ व्यक्ति मध्यम वर्ग के अंतर्गत आते हैं। विभिन्न अध्ययन रिपोर्टों का गहराई से अवलोकन करे तो पाएंगे मध्यम यानि मिडिल क्लास की कोई निश्चित और सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। अलग-अलग रिसर्च और सर्वेक्षणों में अलग-अलग परिभाषाएं दी गई हैं। कुछ रिपोर्ट के अनुसार, मिडिल क्लास वह वर्ग है जिसकी सालाना आय 5 लाख रुपये से 30 लाख रुपये के बीच होती है, जबकि कुछ रिपोर्टें इसे 2 लाख रुपये से 10 लाख रुपये तक मानती हैं। सच तो यह है, महंगाई की मार भी यही वर्ग झेलता है। उच्च वर्ग से होड़ करता यह वर्ग अंदर अंदर खोखला होता जा रहा है।

कोरोना संकट के कारण अर्थव्यवस्था में आई गिरावट से उबरने के लिए यही वर्ग एकमात्र बलि का बकरा बना है। मध्यमवर्गीय परिवार बुनियादी चीजों जैसे घर, भोजन, कपड़े, शिक्षा, पर्यटन आदि पर अधिक खर्च करते हैं। भारत में मध्यमवर्गीय परिवारों का खर्च लाखों करोड़ का है। मध्यम वर्ग ने देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। असल में भारत की अर्थव्यवथा की धुरी है यह वर्ग। मध्यम वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर होता है और दैनिक जीवन में काफी अनिश्चितता का सामना करता है लेकिन, वह बेहतर जीवन स्तर की आकांक्षा रखता है। यह ऐसा वर्ग है जो लेता कम और कर के रूप में देश को देता ज्यादा है। अपनी आवश्यकताएं पूरी न होने के बावजूद टैक्स की भरपाई में आगे रहता है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 6 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, कृत्तिका नक्षत्र सायं 7:29 तक, ब्रह्म योग सायं 6:42 तक, बालव करण दिन 11:45 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से रात्रि 7:29 तक है। रवियोग प्रात: 7:50 तक है और रात्रि 7:29 से पुन: आरम्भ होगा। ज्वालामुखी योग रात्रि 7:29 से रात्रि 10:54 तक रहेगा। आज गुप्त नवरात्रा समाप्त होंगे। आज महानन्दा नवमी, श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:35 तक, चर 11:19 से 12:41 तक, लाभ-अमृत 12:41 से 3:25 तक, शुभ 4:46 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:14, सूर्यास्त 6:08

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
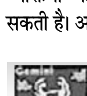
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। स्वभाव पर नियंत्रण रखें।

कर्क
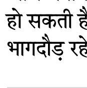
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक योजना बनेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
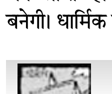
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृश्चिक
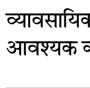
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

कुंभ

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
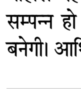
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

आस्था, धर्म, सनातन बनाम पाखंड

महावीर सिंह

कआजकल आस्था, सनातन शब्द का बड़ा बोलबाला है विशेषत: धर्म के नाम पर निकाली जाने वाली बड़ा-बड़ी रैलियों, धर्माचार्यों के सत्संग, प्रवचनों आदि में। आस्था, धर्म, सनातन के साथ ही कुछ पीछे पाखंड भी चलता है। शायद चलता ही नहीं दौड़ता है। कुछ समय दबे पांव पीछे चलने वाला पाखंड आस्था, धर्म, सनातन को पीछे छोड़ देता और सरपट चारों ओर दौड़ लगाकर चारों तरफ छा जाता है। आगे बढ़ने से पहले, ऋगवेद के कुछ श्लोको की तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा जिन्हें नासदीय श्लोक कहा जाता। कुछ विद्वानों की इनकी कुछ इस प्रकार व्याख्या है::–

तब न तो अस्तित्व था, न ही गैर-अस्तित्व यह कथन ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (10.129.1) में है। यह और 10 वें अध्याय के अन्य श्लोक- सूक्त ब्रह्मांड की उत्पती, अस्तित्व, औचित्य पर विचार करते है, प्रश्न हैं, उतरों का प्रयास भी हैं। चूंकि उक्त प्रश्न आदमी करता है, इसलिए यह तो मानना पड़ेगा कि ऋग वेदकाल की शुरुआत में आदमी की तर्क शक्ति काफी विकसित हो चुकी थी। इस श्लोक में यह प्रश्न किया-- इस सृष्टि से पहले क्या था, शायद न आकाश, न अंतरिक्ष, न समय, आखिर यह सृष्टि किसने क्यों रची, कोई रचनाकार है भी या नही, है तो कहां, ऊंचे आकाश में बैठा मात्र दृष्टा है या कर्ता भी---वही जाने।

अब आगे आस्था की बात करते हैं--आस्था वहां शुरू होती है, जहां केवल तर्क से सदियों सदियों से आदमियों के मष्तिस्क में चलते कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते है। जैसे--क्या आदमी के अस्तित्व के पीछे महज बायोलाजिकल घटना ही हैं या कुछ ओर? ब्रह्मांड का अस्तित्व महज एक भौतिकीय घटना है अथवा कुछ और भी? इन प्रश्नों से बहुत पहले भी आदमी ऋतु परिवर्तन, दिन और रात होने, आकाश में दूर चमकने वाले सितारों को, चांद के आकार का घटना, बढ़ना, विभिन्न भयंकर रोग आदि-आदि बहुत सारी घटनाओं को नहीं समझता था।

जिस-जिस काल में आदमी द्वारा उस समय तक विकसित तर्कों नें जिन प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए, उन सब के पीछे आदमी नें कुछ शक्तियों, देवी-देवताओं की कल्पना कर ली। धीरे-धीरे तर्क, प्रयोगों व नए-नए अविष्कारों, खोजों के आधार पर, आदमी विभिन्न ग्रहों की गति, झुकाव आदि बातों को समझने लगा, और अनेक आकाशीय घटनाओं के पृथ्वी पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों यथा मौसम परिवर्तन, समुद्र का ज्वार भाट्टा, भूकम्प आदि अनेक भौतिकीय घटनाओं को समझने लगे वैसे-वैसे इनसे सम्बंधित कल्पित देवताओं की पूजा, डर कम होने लगा। अनेक देवी-देवताओं के प्रति आस्था पीछे छूटने लगी और शनै:-शनै: ऐसे देव विस्मृति के सागर में लुप्त होते गए।

आस्था अपने आप में एक सात्विक, सद्भावना वाला विचार, कर्म है। इसका एक ओर पक्ष है--सदियों से परिवारों में, समाज में बच्चे अपने बड़ों को कुछ देवताओं को पूजते देखते है, किसी देव से जुड़े बड़े पूजनीय स्थलों की महिमा सुनते आते है, तीर्थ यात्राएं करते देखते है और वे भी बिना कोई तर्क वितर्क किए इसे भी अन्य किए जाने वाले कार्यों की तरह, एक करने वाला कार्य मानकर करने लग जाते हैं। किसी चर्चा नें एक विदुषी महिला नें कहा--आस्था एक भ्रम है और अगर इस भ्रम से परिवारों, समाज, देश में सद्भवना, सद्व्यवहार बना रहता है तो ऐसी आस्था से दिक्कत भी क्यों होनी चाहिए?

कुछ किस्से-कहानियां भी आस्था को सदियों तक चलाए रखते है, जैसे गंगा जी स्नान के साथ राजा सगर के और उनके 60 हजार काल्पनिक पुत्रों व परिवार की, स्वर्ग से भगीरथ द्वारा लाई गई गंगा जी में स्नान से शाप से मुक्ति, कल्याण की कहानी जुड़ने से आम जन की आस्था दृढ़ हो गई कि गंगा जी में स्नान करने से खुद के, पुरखों के पाप धुल जाते है, आने वली पीढियों को पुण्य का लाभ मिलता है (इस दृष्टि से तो गंगा किनारे बसने वाले सारे ही पुण्य आत्माएं हैं!!! नहीं बालक, जिसने गंगाजी को लाने के लिए भक्ति की उसी को तो पुण्य लाभ मिलेगा, चलते रस्ते हर किसी को क्यों? तुम भी कुछ भगीरथ जैसा करो तो मिलेगा--और नहीं तो दान ही करो, कुछ है तो!!!)।

इस प्रकार की धारणाओं के प्रति सामान्य जन के मानस में इनके प्रति श्रद्धा, आस्था बनी रहती है।

प्रयागराज में चले रहे महाकुंभ के लिए सबसे प्रचारित बातें यही है कि इसमें नहाने से पूर्व जन्म, इस जन्म के स्वयं के ही नही पुरखो के सब पाप खत्म हो जाएंगे व आने वाली पीढ़ियों को पुण्य लाभ मिलता रहेगा।

वेदों में भी विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों से जुड़े देवों जैसे सूर्य, अग्नि, सोम, वायु-– आदि की कल्पना है। पुराणों में भी तो विभिन्न देवी-देवताओं की दुष्टों के संहार की, उनकी श्रेष्ठता, वर्चस्व की काल्पनिक कहानियां ही तो है (दूर कहीं से एक बाबा की कड़कती आवाज कानों में गूंजी--अबोध, नास्तिक, तुच्छ बुद्धि वाले बालक, तुम्हारी अपवित्र दृष्टि ईश्वर के विस्तार को, पौराणिक कहानियों के संदेश को नहीं देख-समझ सकती, दोष पौराणिक कहानियों का नहीं, तुम्हारा है)। इन देवी-देवताओं की कल्पना के बाद, चतुर-चालाक लोगों की अशिक्षा, अनिभिज्ञताओं का लाभ उठाते हुए, विभिन्न विघ्न, व्याधियों, घटनाओं, गरीबी, अमीरी, मनो इच्छाओं की अप्राप्ति-प्राप्ति के लिए इन कल्पित देवी-देवताओं के कोप, आशीर्वाद को विभिन्न प्रकार की पूजा, अनुष्ठान व उनके प्रति कोताही-अश्रद्धा के साथ जोड़ दिया। तरह-तरह के समाधान बताने का धंदा विकसित कर लिया । ऐसे चतुर चालाक लोग अन्य लोगों की नजरों में अपनी प्रमुखता स्थापित करने लगे जैसे कई कथा वाचक, कई अखड़ों के कई महंत-मठाधीश, महा मण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर आदि। लोग उनके पास जाकर उन्हें दान-दक्षिणा, चढ़ावा देने लगे और पाखंड का धंदा दौडने लगा। इनका अनुसरण स्थानीय स्तरों पर भी होने लगा और कई प्रकार के व्याधियों के संकटमोचक, भोपे-सेवड़े-भूत, भूतनी भगाने वाले, तरह-तरह के अनुष्ठान, नुस्खे बताने वाले पाखंडी अस्तित्व में आ गए।

तथाकथित बाबाओं, सिद्ध पुरुषों के कैसे-कैसे प्रचार पढ़िए--निराहारी/फलाहारी/कांटो वाले (कोई रमेश माझी--कहा जा रहा है, 50 साल से कांटो पर ही चलते, सोते हैं!!!)/एक टांग पर वर्षों से खड़े/गढ़े में बैठे बाबा आदि-आदि नामों से प्रचारित पाखंडी बाबाओं का प्रागट्यय भी हो जाता है।

ऐसे स्थानीय भीड़ आकर्षित करने वाले लोग बड़े-बड़े श्री श्री 1008, 1051, 100---(संख्याओं को नाम के पीछे लगाने का क्या अर्थ है, लेखक के कभी समझ नही आया) पदवियों वाले इन ब्रह्मचारियों/ सिद्धाचार्यों/ कथावाचकों/सिद्ध मंदिरों के देवी-देवताओं के प्रचारको के रूप में स्थानीय यात्राएं निकालने, उनके मठों, मंदिरों में भीड़ ले जाने वाले वाले प्रगट हो गए। यह कोई एक देश की घटना नही, पूरे विश्व में ऐसा हुआ है और हो रहा है।

आजकल कुछ मीडिया पाखंड फैलाने में रात-दिन एक किए हुए है। एक उदाहरण मेरे ध्यान में आता है एक पाखंड करने वाले का दोपहर को नियमित रूप से किसी टीवी चैनल पर वर्षों कार्यक्रम आया। पाखंडी कुछ यों कहता था--(वो कृपा देते थे--तुम अभी जाकर गाजर -बर्फ-टमाटर-अमरूद--खा लेना-- इत्यादि-इत्यादि), कृपा आ जाएगी । अन्य कई प्रकार के मंदिर, मूर्तियों की महिमा की काल्पनिक कहानियां, उनके दर्शन से होने वाले लाभ आदि तथा ज्योतिषियों के पाखंड युक्त कार्य टीवी चैनल्स धड़ल्ले से दिखती है।

कुछ पाखंडी तथाकथित संत-महात्मा-कथा वाचक जो कुछ कह देते है उनसे अखबार भर देते है। टीवी वाले उन पर चर्चाओं का दौर चला देते है। अभी प्रयाग में चल रहे महाकुंभ के सम्बंध में क्या क्या कहा जा रहा है--इसमें नहाने से स्वयं के, पुरखों के पाप धुल जाएंगे और आगे की सात पीढ़ियों को पुण्य लाभ मिलेगा। महाकुंभ में स्नान से जन्म-जन्म के पुण्य फलेंगे। एक पाखंडी नें तो यह तक कह दिया कि जो कुम्भ में मरे उन्हें मोक्ष प्राप्ति हुई है--मौत मत कहिए। एक तथाकथित पाखंडी कथावाचक, सनातन के नाम पर कुछ का कुछ बोलने वाला कह रहा है--महाकुंभ में स्वर्गवासी देवियां, देवता लोग व व्यासजी महाराज व परशुराम जी जैसे अनेक सिद्ध पुरुष मानव रुप में स्नान करने आते है--, हम उन्हें देख पाए यह तो पवित्र सनातनी आत्माओं को ही नसीब होता है--अपवित्र आत्माएं उन्हें नहीं देख पाती जैसे कि नेत्र ज्योति कम/खराब होने पर हम आसपास की चीजों को नहीं देख पाते। विज्ञापन देखिए--महा कुम्भ में स्नान करने से अमरत्व मिलता है, फिर तो 30 करोड़ से उपर तो मीडिया के अनुसार स्नान कर चुके-- उन्हें तो अमरत्व प्राप्त हो गया!!!

सरकार व मीडिया नें कुम्भ स्नान को एक बड़े राजनीतिक-व्यापरिक उत्सव-कार्य में बदल दिया----आस्था को पीछे छोड़ आडम्बर-पाखंड नें प्रमुखता ले ली।

प्रयाग में दो बड़ी नदियां मिलती है और तीसरी की कल्पना कर ली। सरस्वति नदी एक वास्तविकता थी। उसके बहाव क्षेत्र, दिशा पूर्णत: गंगा-यमुना से भिन्न थे। हां, सब का उद्गम हिमालय था-है किंतु हिमालय में हुई भौगोलिक घटनाओं नें सरस्वस्ति को विलुप्त कर दिया। अब पाखंड फैलाने वाले कहते है कि सरस्वति आकाश से आकर अदृश्य रूप से गंगा-यमुना में मिलती है।

ज्योतिष की बात करें तो भारत के चिंतकों नें सराहनीय कार्य किया कि नक्षत्रों की गति व समय की गणना के लिए जहां आकाश धरती पर मिलता है वहां एक ओर से दुसरी ओर (पश्चिम से पूर्व से) तक के आकाश को समानांतर रूप से विभक्त कर दिया और पृथ्वी, चंद्रमा जैसे-जैसे इन क्षेत्रों मे परिगमन करते है वैसे दिन और रात के समय की घटत-बढ़त व समय की गणना आसान हुई। इसको भी आदमी के भाग्य दुख-दर्द के साथ जोड़ कर पाखंड का धंदा बना लिया। पाखंड की अति देखिए, यहां तक होने लगा कि आने वाली संतान सर्वश्रेष्ठ, प्रभावशाली, अमीर बने तो अमुक मुहर्त में ही प्रसव करना है चाहे सिजेरियन ही कराना पड़े। उपचार, ओप्रेसन के लिए भी शुभ मुहर्त निकलवाया जाता है। हर अच्छी-बुरी बात को आदमी के क्रम से दूर ज्योतिषीय गणनाओं के साथ जोड़ दिया।

चलते-चलते, कुछ कथा वाचक जो आए दिन यात्राएं निकाल रहे है, भारत को सनातन हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए उस पर भी--सनातन शब्द वेद, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुराणों में नही प्रयोग में नहीं आया। सनातन मूल्यों, कार्यों, जिम्मेदारियों की संहिता है। परमात्मा, जन्म, मरण सना हैं। सनातन का अर्थ है साश्वत-सदा बना रहने वाला। सनातन में धर्म, पूजा, जप-तप-दान-सत्य-अहिंसा-दया-क्षमा वाला आचरण है। ईश्वर, आत्मा, मोक्ष पर ध्यान का करना सनातन है।

कुछ पंक्तियां सोशल मीडिया में घूम रही है।

''देखा कहर अमावस का,
दिल में गड़ गई शूल।
कठमुल्ले सब नाच रहे, बरस रहे हैं फूल ।।
तपस्वी हुए धनवान, गृहस्थ हो रहे निर्धन।
मानस के उत्तर कांड में कलियुग के वर्णन।।''

कलियुग में आचारहीन और वेद विरोधी लोग ज्ञानी और संन्यासी कहलाएंगे। क्या सटीक बात कही तुलसी दस जी नें, लगभग 10000 साल पहले।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

इलाज और रोगमुक्ति के फर्क को समझना होगा

डॉ. रामावतार शर्मा

एक सामान्य-सी बात अक्सर सुनी जाती है कि जीवन कांटों की डगर है। परंतु यह कथन सत्य से काफी दूर लगती। असंख्य मानवीय कठिनाइयां टाली जा सकती हैं और ऐसा न कर पाने की वजह कोई मूढ़ता नहीं बल्कि ज्ञान की कमी का होना है। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो मनुष्य की कितनी ही व्याधियों और यहां तक कि उसकी समय पूर्व मृत्यु तक का कारण शरीर एवं शरीर के अंगों की कार्य प्रणालियों के बारे में उसकी अनभिज्ञता है। सन 1700 तक दुनिया में चीनी नहीं थी, गुड़ और शक्कर का सामान्य लोगों को पता नहीं था। यानी भोजन में कार्बोहाइड्रेट्स की बहुतायत नहीं थी। पृथ्वी पर शराब सबको उपलब्ध नहीं थी और नहीं थे वे सब तेल जिनसे तले हुए भोजन को बनाया जाता है। माना जाता है कि भारत में प्राचीन समयमें गन्ने से गुड़ शक्कर बनाया जाता था। आगे चलकर मिश्र में चीनी बनाने की विधि विकसित हुई जो भारत में आ कर मिश्री कहलाई। ये सब बातें आंशिक सत्य भी हो सकती हैं परंतु उस समय शर्करा को एक औषधि के रूप में जाना जाता था जिसका उपयोग सिर्फ धनाढ्य लोगों की पहुंच में था। औद्योगिक एवं परिवहन क्रांति के बाद चीनी का प्रवेश हर घर में बहुतायत से हो गया। इसी प्रकार खाद्य तेल भी घर घर पहुंच गया। प्रारंभ में तो सब कुछ ठीक था क्योंकि लोग हर कार्य के लिए कठिन शारीरिक परिश्रम करते थे जिसमें कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट और चर्बी आदि सभी काम आ जाते थे क्योंकि अधिकतर लोगों को भोजन भी सीमित मात्रा में उपलब्ध होता था।

विज्ञान के तीव्र विकास से 19वीं सदी के प्रारंभ से मानव इतिहास के बड़े परिवर्तनों की शुरुआत होने लगी। बदलती जीवनशैली में सुविधाएं ही लोगों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण बनने लगी और आज के समय में जीवनशैली से संबंधित रोगों ने कई वैश्विक महामारियों का रूप ले लिया है। हमारे मेटाबॉलिज्म में आधारभूत परिवर्तन आने लगे हैं जिनको समझना जीवन को बचाए रखने जैसी बात हो चला है। 20वीं सदी के प्रारंभ और उसके पहले और भारत में तो इसके आखिरी चरण तक फैटी लिवर जैसे किसी रोग का नाम तक नहीं था।

आज यह रोग विश्व का अठाणी रोग बन कर एक महामारी का रूप ले चुका है। पूरी दुनिया में, सहारा अफ्रीका के कुछ देशों को छोड़ कर, लोगों का शारीरिक वजन खतरनाक स्तर पर बढ़ गया है। फैटी लिवर सिरोसिस का रूप लेकर लिवर ट्रांसप्लांट का प्रमुख कारण बन गया है। लिवर, किडनी, पेट, पैंक्रियाज और यहां तक कि हृदय के बाहर एवं मांसपेशियों के तंतुओं के बीच फैट जमा होने से इंसुलिन के प्रति प्रतिरोध बढ़ने से रक्त में इंसुलिन के स्तर बढ़ रहे है जिसे हाइपर इन्सुलिनिमिया की स्थिति कहते हैं। इंसुलिन प्रतिरोध होने से इसके उच्च रक्त स्तर होने के बावजूद ब्लड शुगर लेवल भी बढ़ रहे हैं।

भोजन में फ्रुक्टोज की बहुतायत होने से यूरिक एसिड के रक्त स्तर बढ़ रहे हैं। यूरिक एसिड शरीर में व्यापक प्रज्वलन (इन्फ्लेमेशन) पैदा कर रहा है। हाइपर इन्सुलिनिमिया और उच्च यूरिक एसिड होने से कैंसर होने की संभावनाएं 12 गुणा, अल्जाइमर की 5 गुणा और हार्ट अटैक की संभावनाएं 6 गुणा बढ़ जाती हैं।

आधुनिक भोजन और फास्ट फूड हमारी निष्क्रिय जीवनशैली के साथ मिल कर कोशिकीय मेटाबॉलिज्म में भारी नकारात्मक प्रभाव पैदा करते हैं। यही कारण है कि पूरे विश्व और खासकर भारत में क्रॉनिक बीमारियों की बाढ़ सी आ गई है और लोग अरबों रुपए की दवाएं खाने के बावजूद रोग मुक्त नहीं हो पा रहे हैं।

याद रखना चाहिए कि डॉक्टर, वैद्य, होमियोपैथ आदि सभी क्रॉनिक बीमारी में राहत और यदाकदा रोगमुक्ति दिलवाने के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं। आप के शरीर को स्वस्थ रखना आपकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी का निर्वाह आप सिर्फ ज्ञान द्वारा ही कर सकते हैं वरना यह एक कठिन कार्य होगा और यदि आनुवांशिकता का सहारा न हो तो किसी भी गंभीर बीमारी की शुरुआत होना संभव होगा। हाई बीपी, हाई रक्त ट्राइग्लिसराइड, हाई ब्लड शुगर और पेट की मोटाई इंगित करते हैं कि आपका मेटाबॉलिज्म खतरनाक स्तर तक बिगड़ चला है।

यदि आप अपने आप को उपरोक्त किसी भी स्थिति में पाते हैं तो अपने डॉक्टर से तो सलाह लेते रहिए पर इससे भी कहीं बेहतर होगा कि आप किसी ऐसे जीवन सलाहकार से राय लें जो मेटाबॉलिज्म के बारे में आपको सलाह ही नहीं बल्कि प्रशिक्षण दे सके ताकि आप जीवन पर्यंत महज दवा का सेवन ही नहीं करते रहें बल्कि रोग के व्यापक दुष्प्रभावों से मुक्त तो सकें और संभवत: रोगमुक्त भी हो सकें। आज कल जो यकायक मृत्यु के मामले आ रहे है इनके पीछे मेटाबोलिक स्वास्थ्य में व्यापक गड़बड़ी जिम्मेदार होती है। माना मृत्यु निश्चित है पर क्या समय पूर्व मृत्यु को सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त है? जरा सोचिए और स्वस्थ जीवन की तरफ कदम बढ़ाइए।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

राजस्थान में व्यवस्थित रूप से हो रहा है नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन : कृष्ण कुणाल

जयपुर। शिक्षा समाज की रीढ़ है। एक शिक्षित समाज ही सही मायने में विकसित समाज बन सकता है। भारत की शिक्षण प्रणाली में नई शिक्षा नीति 2020 एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आई है। यह नीति केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा के संपूर्ण ढांचे को बदलने का प्रयास करती है। नई शिक्षा नीति के तहत बुनियादी शिक्षा को अधिक मजबूत व समावेशी बनाने के लिए कई अहम नियम बनाए गए हैं और बदलाव किए गए हैं। राजस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में विभिन्न पहल एवं गतिविधियां शामिल हैं जिन्हें शिक्षा विभाग द्वारा व्यवस्थित सामंजस्य के साथ लागू किया जा रहा है।

शासन सचिव शिक्षा कृष्ण कुणाल का कहना है कि नई शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन को प्रभावी बनाने के लिए, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने स्कूल शिक्षा के लिए कार्यान्वयन योजना विकसित की है, जिसे Students and Teachers Holistic Advancement through Quality Education (SARTHAQ) कहा जाता है। (SARTHAQ) ने नई शिक्षा नीति की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए 297 कार्यों को स्पष्ट लक्ष्यों, परिणामों और समय सीमाओं के साथ परिभाषित किया है। इन कार्यों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए 6 समितियां बनाई गई हैं, जो नई शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों पर केंद्रित हैं। ये समितियां नई शिक्षा नीति की सिफारिशों को लागू करने की दिशा में लगातार काम कर रही हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय (MOE) ने कार्यों के कार्यान्वयन की प्रगति को ट्रैक करने के लिए एक ट्रैकर विकसित किया जिसके माध्यम से हर महीने प्रगति के अपडेट शिक्षा मंत्रालय के साथ साझा किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति के 86 महत्वपूर्ण पैराग्राफ और उनकी सिफारिशों को समाहित करने के लिए समग्र शिक्षा योजना को पुनर्कल्पित किया गया है ताकि इसे नीति के अनुरूप और सभी के लिए समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के अनुरूप बनाया जा सके।

कृष्ण कुणाल

हर बच्चे तक पहुंचेगी शिक्षा की रोशनी, हर शिक्षक बनेगा मजबूत :-कृष्ण कुणाल वर्ष 2025 में राजस्थान में नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में विभाग के दृष्टिकोण के बारे में बताया हैं कि इस वर्ष में सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और शिक्षकों में से कम से कम 90 प्रतिशत को ECCE और FLN की उन्नत पद्धितयों में प्रशिक्षित करने और बालवाटिका कार्यक्रम को सभी प्राथमिक विद्यालयों में लागू करने की दिशा में काम किया जाएगा। सार्वभौमिक पहुंच और समानता के लिए वंचित समुदायों के बच्चों को प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित किया जाएगा। ड्रॉपआउट कम करने के लिए छात्रवृत्ति और प्रोत्साहन योजनाएँ शुरू करना, सभी स्कूलों में उच्च गति इंटरनेट और आधुनिक ICT उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, शिक्षकों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार करना, व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार करने के लिए कक्षा 9-12 के कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देना और उन्हें उद्योग भागीदारों से जोड़ना प्रमुख उद्देश्य हैं। इनके साथ ही उद्यिमता शिक्षा मॉड्यूल शुरू करने, राज्य साक्षरता केंद्र के माध्यम से वयस्क साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार करने, डिजिटल साक्षरता को वयस्क शिक्षा का अहम हिस्सा बनाने व सभी जिलों में न्यूनतम साक्षरता स्तर सुनिश्चित करने की दिशा में काम किया जाएगा।

इस वर्ष में NEP कार्यान्वयन के लिए निगरानी ढाँचे को मजबूत करने और डेटा विश्लेषण व रीयल-टाइम ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग करने का भी लक्ष्य है। साथ ही गैर सरकारी संगठनों व निजी क्षेत्र के सहयोग से राज्यभर में नई शिक्षा नीति से संबंधित कार्यक्रम चलाए जाने की योजना है।